भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसन्धान परिषद्
नवदेहली

के सौजन्य से

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

द्वारा संयुक्त तत्त्वाधान में

भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा

ऑनलाइन/ऑफलाइन

मई 5 से 7
2023
(शुक्रवार से रविवार)

वैशाख शुक्ल पूर्णिमा
से
ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया

राष्ट्रीय सङ्गोष्ठी

विषय

भारतीय ज्ञान-परम्परा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

Bharatiya Knowledge Tradition with refence to Natioanl Education Policy-2020

पंञ्जीकरण लिंक-
https://forms.gle/BRkN2Yo2D1fGzir89

स्थानः- महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

About the University and its Significance

Maharshi Valmiki Sanskrit University, Kaithal is the first Sanskrit University of Haryana established by the Haryana Government Act 20 of 2018 which is affiliated with Section 2 (F) of the University Grants Commission. Sanskrit University is determined to promote and protect the Indian knowledge tradition at the world level as per the guidelines of the Government of Haryana. To achieve the same, Maharshi Valmiki Sanskrit University, Kaithal has established the "Indian Knowledge Tradition Research and Training Centre". At present, the University is running graduate, post-graduate, and research degree in the subjects of Indian thought like Grammar, Vedas, Literature, Philosophy, Astrology, Yoga, Vedic Mathematics, Rituals, Hindu Studies, and Ayurveda. The root of all the subjects of the world lies in the Vedas and it is universally known that the root of all scientific subjects lies only in the continuous tradition of Sanskrit literature.

About Shiksha Sanskrit Utthana NYASA

After independence, it was expected that the form of education of the country would be according to its needs from the Indian point of view, but it did not happen. We believe that the root cause of most of the country's problems is the faulty education system, therefore change in education should be a matter of priority. To achieve said goal, on 24 May 2007, Shiksha Sanskirti Utthan Nyas was established. The aim of the trust is to give "new options in the education of the country" so that education should be in line with our culture, nature, and progress. Through this, the path of world welfare can be paved by the proper development of the country through character building and overall development of the personality of the students.

Objectives of NYASA

- Correcting distortions and anomalies prevailing in educational system and courses.
- Preparing a curriculum of education format according to modern needs and on the basis of Indian principles.
- Ensuring autonomous, and value-based, education in the mother tongue.

To achieve the above mentioned goals, thousands of seminars, discussions, and workshops have been organized in collaboration with various educational institutions across the country to create a new alternative in education. Syllabus of various subjects are being prepared on the basis of the above concepts. For its implementation, MoUs have been signed with many universities and other educational institutions.

In respect of this, the government, educational institutions, and social educational organizations should come together on one platform and jointly take forward the efforts at their respective levels. For this, awareness programs are being organized at different levels.

विश्वविद्यालय का वैशिष्ट्य

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल हरियाणा सरकार द्वारा 2018 के अधिनियम 20 के अनुसार प्रतिष्ठित हरियाणा का प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 2(F) से सम्बद्ध है। संस्कृत विश्वविद्यालय हरियाणा सरकार के दिशानिर्देशानुसार भारतीय ज्ञान-परम्परा को विश्व स्तर पर प्रचारित एवं प्रतिष्ठित करने को कृतसंकल्प है। इसके लिए महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल ने **"भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र"** की स्थापना की है। वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा व्याकरण, वेद, साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, योग, वैदिक गणित, कर्मकाण्ड, हिन्दू-अध्ययन, आयुर्वेद एवं धर्मशास्त्र इत्यादि भारतीय चिन्तन शृंखला के विषयों का स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध उपाधियों हेतु अध्ययन-अध्यापन करवाया जाता है। विश्व के समस्त विषयों का मूल वेद-वेदाङ्ग में ही निहित है तथा सर्वविदित है कि समस्त वैज्ञानिक विषयों का मूल संस्कृत साहित्य की सातत्यपूर्ण परम्परा में ही निहित है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के विषय में

स्वतंत्रता के बाद यह अपेक्षा थी कि देश की शिक्षा स्वरूप भारतीय दृष्टिकोण से अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप होगा परन्तु ऐसा नहीं हुआ। हमारा मानना है कि देश में अधिकतर समस्याओं की जड़ दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति है, इसलिए शिक्षा में परिवर्तन प्राथमिकता का विषय होना चाहिए। इस हेतु दिनांक २४ मई, २००७ को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया। न्यास का लक्ष्य है **"देश की शिक्षा में नए विकल्प"** देना ताकि शिक्षा हमारी संस्कृति, प्रकृति एवं प्रगति के अनुरूप बने। इसके माध्यम से छात्रों के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास द्वारा देश का समुचित विकास करते हुए विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

न्यास का उद्देश्य:-

- शैक्षिक पाठ्यक्रमों में व्याप्त विकृतियों एवं विसंगतियों को ठीक कराना,
- शिक्षा का स्वरूप भारतीय सिद्धान्तों के आधार पर आधुनिक आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम तैयार करना,
- शिक्षा स्वायत्त, मूल्य आधारित एवं मातृभाषा में हो।

उपरोक्त उद्देश्य प्राप्त करने के लिए देशभर में विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के साथ मिलकर हजारों की संख्या में संगोष्ठी, परिचर्चा एवं कार्यशालाओं का आयोजन करके **"शिक्षा में नए विकल्प"** का स्वरूप तैयार किया गया है। इन सभी संकल्पनाओं को आधार बनाकर विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे है। इसको क्रियान्वित करने हेतु अनेकों विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षिक-संस्थानों से अनुबंध (MoU) किए गए है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सरकार, शैक्षिक-संस्थान एवं सामाजिक-शैक्षिक-संगठन ये सभी एक मंच पर आकर संयुक्त रूप से अपने-अपने स्तर पर प्रयासों को बढाएं। इसलिये विभिन्न स्तरों पर **ज्ञानोत्सवों** के आयोजन किये जा रहे हैं।

Objectives of National Seminar

The Bharata is the well equipped with knowledge tradition right from the Vedic era. It is well-known that in ancient time India led the whole world in the field of wisdom and science as *Vishav Guru* (Master of World). The main reason for this is universal and timeless Vedic knowledge wealth, in which all modern subjects have been presented in a very specific way. Astronomy, Ayurveda and Surgery, Yoga, Agriculture, Botany, Environment, Philosophy, Literature, Grammar, Meteorology, Chemistry, etc. have always been prestigious subjects in Vedas and Sanskrit literature. At present time, the whole world is Oriented toward Indian knowledge and science. The National Education Policy 2020 also emphasizes on Indian knowledge tradition. Bearing above facts in mind, Maharshi Valmiki Sanskrit University, Kaithal (Haryana) has planned to organize a three-day National Conference on "Indian Knowledge Tradition: In the Perspective of National Education Policy 2020" on 5-7 May, 2023 in collaboration with NYAS. Key objective of this conference is to give a platform to several National and International scholars to provide an academic form of ancient knowledge tradition for mainstream education of the country in respect of national education policy (NEP 2020) which is one of the aims of NEP. It is expected that as a result of the above said conference all shareholders of our education system will be deeply rooted not only in thoughts but also in spirit, intellect, and deeds, originating pride in developing skills, values, and temperament with knowledge. To achieve the above-discussed objective Maharshi Valmiki Sanskrit University, Kaithal has established a *"Bharatiya Jnana Parampara Shodha evam Prashikshana Kendra"*. Major objectives of this Kendra are as follows:

(A) Contemporary Indian higher education system is comprised of Humanities, Social Sciences, Technology, etc. as the main subjects in the field of study and research. The material related to the above-said subjects is to be compiled from a research point of view according to the Indian knowledge tradition.

(B) To design the various modules courses on the basis of Bharatiya Jnana Tradition (i.e. Physics in Indian Knowledge Tradition, Ancient Indian Chemical Science, Metallurgy in Indian Tradition, etc.).

(C) Young scholars of the Sanskrit tradition will be given six-monthly and one year training to equip them with the modern aspects of that domain as well as in the traditional dimension, so that those trained scholars can be appointed as teachers in Indian universities, and scientific and technical institutions to teach Bharatiya Jnana Parampara.

As stated above, Maharshi Valmiki Sanskrit University, Kaithal (Haryana), and Shiksha Sanskrit Utthan Nyas, are going to organize a three-day National Conference (Date 5-7 May, 2023) to bring this spirit of the National Education Policy-2020 on the ground.

राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा) में दिनांक ५-७ मई, २०२३ को **"भारतीय ज्ञान-परम्परा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में"** विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाना है। सर्वविदित है कि भारत, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान-विज्ञान में मार्गदर्शन करते हुए विश्वगुरु रहा है। इसमें मूल कारण हमारी सार्वभौम, सार्वकालिक एवं सर्वग्राही वैदिक ज्ञान सम्पदा है, जिसमें समस्त आधुनिक विषयों को बहुत ही विशिष्ट प्रकार से प्रतिपादित किया गया है। खगोल विज्ञान, आयुर्वेद और शल्य विज्ञान, योग, कृषि, वनस्पति, पर्यावरण, दर्शन, साहित्य, व्याकरण, मौसम विज्ञान, रसायन विद्या इत्यादि विषय सर्वदा से ही हमारे वेद-वेदाङ्गों एवं संस्कृत साहित्य में प्रतिष्ठित रहे हैं। वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व भारतीय ज्ञान परम्परा की ओर उन्मुख है। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय विद्वानों के द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-२०२०) के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा का एक अकादमिक स्वरूप तैयार किया जाना है जिसे भारतीय शिक्षा की मुख्यधारा में सन्निविष्ट करना है, जो नीति के घोषित उद्देश्यों में से एक है। परिणामस्वरूप हमारी शिक्षा व्यवस्था के सभी भागीदारों को अपनी जड़ों से परिचय होगा। जिससे न केवल हम सभी में गर्व पैदा होगा बल्कि साथ ही ज्ञान के साथ कौशल और मूल्यों का विकास भी होगा। इस लक्ष्य की पूर्ति के उद्देश्य से महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय ने **'भारतीय ज्ञान परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र'** की स्थापना की है। इस केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

क. समकालीन भारतीय उच्च शिक्षा के अंतर्गत मानवीकी, समाजविज्ञान, विज्ञान, तकनीकी इत्यादि विषय मुख्य रूप से अध्ययन एवं शोध में प्रचलित है उन पर भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार शोधात्मक दृष्टि से सामग्री का संकलन करना है।

ख. संकलन सामग्री के आधार पर विविध विषय पाठ्यक्रमों का निर्माण (जैसे भारतीय ज्ञान परम्परा में भौतिकी, प्राचीन भारतीय न्याय व्यवस्था, भारतीय परम्परा में धातुविज्ञान इत्यादि)।

ग. संस्कृत परम्परा में दीक्षित युवा विद्वानों का उस ज्ञान परम्परा के आधुनिक पक्ष के साथ पारम्परिक पक्ष में अध्यापन योग्य क्षमता निर्माण हेतु षाण्मासिक एवं वार्षिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिससे उन प्रशिक्षित विद्वानों को भारतीय विश्वविद्यालयों, वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थाओं में अध्यापक नियुक्त किया जा सकेगा।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा) तथा शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास इस भावना को धरातल पर लाने के लिए तीन दिवसीय (दिनांक ५-७ मई, २०२३) राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है इस राष्ट्रीय गरिमा के अकादमिक यज्ञ में देश के विद्वानों और शोध छात्रों से भाग लेने और योगदान करने का अनुरोध करते है।

This National Education Policy 2020 is the first education policy of the 21st century and aims to address the many growing developmental imperatives of our country. This Policy proposes the revision and revamping of all aspects of the education structure, including its regulation and governance, to create a new system that is aligned with the inspirational goals of 21st century education, including SDG4, while building upon India's traditions and value systems.

The rich heritage of ancient and eternal Indian knowledge and thought has been a guiding light for this Policy. The pursuit of knowledge (Jnana), wisdom (Pragyaa), and truth (Satya) was always considered in Indian thought and philosophy as the highest human goal. The aim of education in ancient India was not just the acquisition of knowledge as preparation for life in this world, or life beyond schooling, but for the complete realization and liberation of the self. World-class institutions of ancient India such as Takshashila, Nalanda,Vikramshila, Vallabhi, set the highest standards of multidisciplinary teaching and research and hosted scholars and students from across backgrounds and countries. The Indian education system produced great scholars such as Charaka, Susruta, Aryabhatta, Varahamihira, Bhaskaracharya, Brahmagupta, Chanakya, Chakrapani Datta, Madhava, Panini, Patanjali, Nagarjuna, Gautama, Pingala, Sankardev, Maitreyi, Gargi and Thiruvalluvar, among numerous others, who made seminal contributions to world knowledge in diverse fields such as mathematics, astronomy, metallurgy, medical science and surgery, civil engineering, architecture, shipbuilding and navigation, yoga, fine arts, chess, and more. Indian culture and philosophy have had a strong influence on the world. These rich legacies to world heritage must not only be nurtured and preserved for posterity but also researched, enhanced, and put to new uses through our education system.

-Source NEP-2020 Document

Organising Committee

Chief Patron

Hon'ble Sh. Atul Kothari

General Secretary, Shisksha Sanskrit Utthan Nyas, New Delhi

Director of the Seminar

Prof. Ramesh Chandra Bhardwaj

Vice-Chancellor, M.V.S.U, Kaithal

Chairman, Organising Committee

Prof. Sanjeev Sharma

Registar, M.V.S.U, Kaithal

Convenor

Dr. Naresh Sharma

Bhartiya Knowledge Tradition Research & Training Centre

70828-11234

Co-Chairman, Organising Committee

Dr. Jagat Narayan

Dean, M.V.S.U, Kaithal

99960-41064

आवास समिति

प्रो. हितेन्द्र त्यागी,

संयोजक, शि. सं. उ० न्यास, हरियाणा

मो. 94162-95497

डॉ. रामानन्द मिश्र

मो. 73551-15414

डॉ. मनोज

मो. 80534-73380

आवागमन समिति

डॉ. शीतांशु त्रिपाठी

मो. 91316-69408

डॉ. नवीन शर्मा

मो. 96508-34736

पञ्जीकरण लिंक-

https://forms.gle/BRkN2Yo2D1fGzir89

E-Mail : bktrtc.mvsu@gmail.com